शिक्षक - रवि शंकर राम, विषय - अर्थशास्त्र
दिनांक - 22-08-2020 वर्ग - M.A-II

प्रतिफल या ब्याज की दरें (Rates of Interest or Return) -

कीड़मैन उन तीन ब्याज की दरों r_m, r_n, तथा r_e पर विचार करते हैं जो मुद्रा की माँग निर्धारित करते हैं। r_m स्वयं मुद्रा पर ब्याज दर (own rate of interest) प्रदर्शित करता है। यह ध्यान रहे कि करेंसी तथा माँग-जमा के रूप में रखी गई मुद्रा कोई ब्याज अर्जित नहीं करती हैं। किन्तु बचत तथा स्थिर जमा के रूप में संचित मुद्रा कुछ ब्याज दर अर्जित करती हैं तथा यही ब्याज की दर ही मुद्रा के माँग फलन में r_m द्वारा प्रदर्शित है। अपनी सम्पत्ति का कितना बड़ा भाग मुद्रा के रूप में संचय किया जाए इसका निर्धारण करने में व्यक्ति मुद्रा पर ब्याज की दर की तुलना ऋणपत्रों तथा अन्य परिसम्पत्तियों पर ब्याज की दर से करेगा। ऋणपत्रों (r_b) तथा शेयरों (r_e) पर प्रतिफल की दरों में वृद्धि के साथ मुद्रा संचय की अवसर

लागत में वृद्धि होगी जो मुद्रा संचय की मांग को कम कर देगी। अतः मुद्रा की माँग ऋण-पत्रों, शेयरों तथा अन्य इसी प्रकार की गैर-मुद्रा परिसम्पत्तियों पर ब्याज या प्रतिफल की दरों से ऋणात्मक रूप से सम्बन्धित होती है।

⇒ कीमत स्तर (price level) :- कीमत स्तर भी मुद्रा शेषों की माँग निर्धारित करता है। एक ऊँचे कीमत स्तर का अर्थ यह होता है कि लोगों को क्रय-विक्रय की पूर्ववत् मात्रा का सम्पादन करने अर्थात वस्तुओं तथा सेवाओं की पूर्ववत मात्रा क्रय करने के लिए अपेक्षाकृत अधिक नकद-मुद्रा शेषों (nominal money balance) की आवश्यकता होगी। जैसा की ऊपर कहा गया है कि यदि आय (Y) को सम्पत्ति (W) के स्थान पर लिया जाता है, जो मुद्रा की माँग की सबसे महत्वपूर्ण निर्धारक तत्व होती है तो नकद-आय Y_p मुद्रा की माँग का अत्यधिक महत्वपूर्ण निर्धारक तत्व

हो जाती है। यहाँ y वास्तविक आय (अर्थात वस्तुओं के रूप में) है तथा P कीमत स्तर प्रदर्शित करता है। जैसे-जैसे कीमत स्तर में वृद्धि होती है, मुद्रा की माँग में वृद्धि होगी तथा इसके विपरीत, यदि कीमत स्तर कम होता है तो मुद्रा की मांग में कमी होगी। वस्तुतः लोग वास्तविक मुद्रा शेष (M/p) के अपने वांछित स्तर प्राप्त करने के लिए एक नगद मुद्रा शेषों (M) को समायोजित करते हैं।

⇒ मुद्रास्फीति की प्रत्याशित दर ($\Delta P/P$) ⇒ यदि लोग अधिक मुद्रास्फीति की दर की आशा करते हैं तो वे अपने मुद्रा संचय की माँग में कमी करेंगे। इसका कारण यह है कि वस्तुओं तथा सेवाओं के क्रय करने की शक्ति के रूप में मुद्रास्फीति उनके मुद्रा-शेषों के मूल्य को कम कर देती है। यदि मुद्रास्फीति की दर ब्याज की ~~दर~~ नगद दर की अपेक्षा अधिक होती है तो मुद्रा पर प्रतिफल की दर ऋणात्मक हो जायेगी।

अतः लोग अपेक्षाकृत अधिक मुद्रा स्फीति की दर की आशा करते हैं तो उनमें अपने मुद्रा-संचय को उन वस्तुओं तथा अन्य परिसम्पत्तियों में रूपान्तरित करने की प्रवृत्ति

होगी जो मुद्रास्फीति से प्रभावित नहीं होती हैं। इसके विपरीत, यदि लोग कीमत स्तर में कमी की आशा करते हैं तो उनकी मुद्रा संचय की माँग में वृद्धि होगी।''

⇒ संस्थागत तत्व (Institutional factors) ⇒ मजदूरी भुगतान तथा बिल भुगतान के ढाँचे जैसे संस्थागत तत्व भी मुद्रा की माँग को प्रभावित करते हैं। जो विभिन्न अन्य तत्व सम्पूर्ण आर्थिक वातावरण को प्रभावित करते हैं, वे मुद्रा की माँग को भी प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए— यदि युद्ध या अवसाद प्रत्याशित हैं तो मुद्रा शेष की माँग में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त पूँजी बाजार की अस्थिरता भी मुद्रा की माँग में वृद्धि कर देगी जो ऋणपत्र तथा शेयरों में विनियोग से लाभ प्राप्त करने के सम्बंध में लोगों के विश्वास को कम कर देती है। इसी में राजनीतिक अस्थिरता जैसे तत्व भी मुद्रा की माँग को प्रभावित करती है। उक्त संस्थागत तत्वों की व्याख्या करने के लिए फ्रीडमैन अपने मुद्रा माँग फलन में 'U' चर को सम्मिलित करते